दक्षिण पश्चिम हरियाणा के सामाजिक एवं शैक्षिक विकास में राव बलबीर सिंह का योगदान

MAHESH SINGH (PGT HISTORY)
G.S.S.S.KANINA
MOHINDER GARH (HARYANA)

Abstract (सारांश) :- भारतीय ज्ञान परम्परा का विश्व साहित्य को प्रेरणा प्रदान करती है। इसकी संस्कृति को विश्व की प्राचीनतमा संस्कृति माना गया है । भारत के शैक्षिक एवं सामाजिक विकास में हरियाणा प्रदेश के प्राचीन साहित्य का अवर्णनीय योगदान है। हरियाणा राज्य की स्थापना सन् 1966 में एक नवम्बर को पंजाब से अलग होकर हुई।[1] समय के कालखण्डों में विभाजित होते हुए इसका विकास सदैव आबाध गति से प्रवाहमान रूप में होता रहा है। हरियाणा प्रदेश को विकसित करने में अनेक साहित्यकारों एवं दार्शिनिकों , लेखकों एवं नेताओं , समाज सुधारकों का योगदान रहा है। जिसमें लाल तीन का विशेष योगदान माना जाता है। जिसमें भजनलाल , बंशीलाल एवं देवीलाल का महानतम योगदान है । इसी क्रम में रेवाडी प्रदेश के राव तुलाराम का योगदान कदापि विस्मृत नही किया जा सकता है। राव तुलाराम के सामाजिक उत्थान एवं समाजप्रेम से प्रभावित होकर उनके वंशजों ने हरियाणा प्रदेश के विकास में अपने महुमूल्य जीवन न्योछावर किया। मुख्यतया दक्षिण पश्चिम हरियाणा के सामाजिक हितों को जीवन का लक्ष्य मानकर राव तुलाराम के वंशज राव बलबीर सिंह का योगदान कालखण्डों के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में वर्णित है। राव बलबीर सिंह राव तुलाराम के इकलौते पुत्र राव युधिष्ठिर के गोद लिए हुए पुत्र हैं।[2] इन्होंने सामाजिक मूल्यों को अपने जीवन का आधार बनाते हुए दक्षिण पश्चिम हरियाणा के योगदन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। समाज एवं शिक्षा के क्षेत्र में इन्होंने अनेक क्रान्तिकारी बदलाव किए। जिनका प्रभाव वर्तमान समय में परिलक्षित होता है। इन्होंने रेवाडी जिले में भगवत भक्ति आश्रम की स्थापना करते हुए समाज को नूतन प्रेरणा प्रदान की । इनके सामाजिक एवं शैक्षिक कार्यों का वर्णन दक्षिण पश्चिम हरियाणा के विकास में मील के पत्थर सिद्ध माने गए हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र ***"दक्षिण पश्चिम हरियाणा के सामाजिक एवं शैक्षिक विकास में राव बलबीर सिंह का योगदान"*** को केन्द्र में रखकर लिखा गया है । वर्तमान समय की सामाजिक एवं शैक्षिक गतिविधियों में यह शोधपत्र अपनी मौलिकता को सिद्ध करता है।

[1] . आभीर कुलदीपिका , मान सिंह , पृ० सं० , 6-7

[2] . समेरिका , पत्रिका , नई दिल्ली, पृ० सं० , 41

Key-Words (शब्द संकेतक) :- राव बलबीर सिंह का परिचय , सामाजिक योगदान , गऊ सेवा संचालन , मुफ्त दवाएँ , विश्रामग्रह , शैक्षिक योगदान , ब्रह्मचारी विद्या अध्ययन केन्द्र , महिला शिक्षा जाग्रति, पुस्तकालय स्थापना एवं मुद्रण , अहीर विद्यालय की स्थापना ।

Subject (विषयवस्तु) :- दक्षिण पश्चिम हरियाणा प्रदेश इतिहाकारों एवं लेखकों की लेखनी को प्रभावित करने में सदैव अग्रणी रहा है। इसके सामाजिक , धार्मिक ,राजनैतिक , शैक्षिक , आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में अनेक साहित्यकारों , स्वतन्त्रा सेनानियों एवं समाज सुधारकों नें महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इनमें राव तुलाराम के वंशज उनके पौत्र राव बलबीर सिंह का योगदान कदापि विस्मृत नही किया जा सकता है। उन्होंने अपने पूर्वजों की प्रेरणा से दक्षिण पश्चिम हरियाणा के विकास में समय के अनुसार अपना योगदान प्रदान किया एवं जनसमाज में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया । राव बलबीर सिंह का दक्षिण पश्चिम हरियाणा के क्षेत्र में अवर्णनीय योगदान है । समाज के प्रत्येक पहलू को ध्यान में रखकर उन्होंने अनेक कार्य किए जो वर्तमान में समाज को प्रेरणा प्रदान करते हैं। उनके द्वारा प्रदत्त सामाजिक योगदान का विवरण इस प्रकार है ।

1. राव बलबीर सिंह का सामाजिक योगदान :- राव बलबीर सिंह का दक्षिण पश्चिम हरियाणा के क्षेत्र में सामाजिक योगदान महत्त्वपूर्ण कार्य माना जाता है। राव बलबीर सिंह ने हरियाणा प्रदेश के वासियों को हिन्दुत्त्व के प्रति जाग्रत करने हुए अनेक कार्यों का संचालन किया। उन्होंने मथुरा निवासी लोकप्रिय सन्त स्वामी परमानन्द के सानिध्य में रेवाडी जिले में भगवत भक्ति आश्रम की स्थापना की । इसकी स्थापना शरद पूर्णिमा विक्रम संवत् सन् 1975 को की गई ।[3] समाज को प्रेरणा प्रदान करने में यह आश्रम सदैव जनसमाज के लिए प्रेरणादायक रहा है। न केवल हरियाणा प्रदेश में अपितु यह आश्रम अपनी लोकप्रियता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण बना । इसमें महात्मा गांधी की शिष्या मीरा बेन ने इस आश्रम में अधिक समय व्यतीत किया एवं अनेक कार्यों की सराहना की । इस प्रकार से राव बलबीर सिंह द्वारा दिए गए कतिपय प्रमुख सामाजिक कार्यों का वर्णन यहाँ प्रस्तुत है ।

2. गऊसेवा कार्य संचालन :- राव युधिष्ठिर सिंह के समय आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रेवाडी जिले में सन् 1880 में गऊशाल की स्थापना की ।[4] इसके संचालन का दायित्व जब राव बलबीर सिंह को दिया गया , उस समय उन्होंने कर्तव्यनिष्ठ होकर अपना दायित्व निभाया । वर्तमान समय में इस गऊशाला को भारत की प्राचीनतम गऊशाला होने के गौरव प्राप्त है ।

---

[3]. यादवों का इतिहास , स्वामी सुधानन्द योगी , पृ० सं० , 358

[4] . अहीरवाल का इतिहास एवं संस्कृति , के.सी.यादव , पृ० सं० , 114

राव बलबीर सिंह ने इस गऊशाला के संचालन में सर्वप्रथम गायों के निवास हेतु उत्तम व्यवस्था करवाई । इसके बाद उनके लिए हरे चारे का प्रबन्ध करवाया । समय समय पर यहाँ की स्वास्थ्य चिकित्सा करवाने का काम करवाया । गायों के जलपान हेतु शुद्ध जल की व्यवस्था करवाई गई । यह सभी कार्य राव बलबीर सिंह ने कर्तव्यनिष्ठ होकर निभाए एवं गऊशाला के विकास में अपना योगदान प्रदान किया। समाज में यह गऊशाला प्रतिष्ठा को प्राप्त हुई ।

वर्तमान समय में भारत सरकार द्वारा गौ संरक्षण , गऊशालाओं का निर्माण तथा इनके आवास हेतु अनेक योजनाओं का संचालन किया जा रहा है । हरियाणा प्रदेश में इस गऊशाल से प्रेरणा लेकर अनेक गऊशालाओं का निर्माण हुआ है ।

3. मुफ्त दवाएँ प्रदान करने का कार्य :- समाज के हर वर्ग की समस्याओं का समाधान करते हुए राव बलबीर सिंह ने स्वास्थ्य को केन्द्र में रखकर मुफ्त में दवाईयाँ प्रदान करने का कार्य किया । आश्रम में आने वाले भक्तजनों एवं समाज के लोगों को मुफ्त में दवाईयाँ प्रदान की जाती थी। मानव सेवा की यह उनके द्वारा किया गया सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इन कार्यों से प्रभावित होकर ग्रामीण जन राव बलबीर सिंह को अपना मसीहा मानते थे । यह प्रेरणा दायक कार्य राव बलबीर सिंह के मानवतावादी दृष्टिकोण को परिभाषित करता है ।

4. विश्रामग्रह की व्यवस्था :- राव बलबीर सिंह के सामाजिक कार्यों की परिचर्चा चारों दिशाओं में फैल गई । समय के अनुसार उनकी ख्याति बढती चली गई । दूरस्थ स्थानों के लोग अपनी सामाजिक समस्याओं को लेकर उनके पास आने लगे । अत: उन्होंने सर्वप्रथम उनके लिए विश्राम ग्रह की स्थापना करवाई । यह विश्रामग्रह वर्तमान में रेवाडी के भगवत भक्ति आश्रम में स्थित है। यह कार्य उनके द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों में से एक है। समाज में इस कार्य के लिए उनको प्रतिष्ठा प्राप्त हुई ।

5. धर्म-परिवर्तन कार्य में हिन्दुत्त्व जाग्रति प्रदान करना [5] :- सामाजिक कार्यों की परिगणना में यह कार्य राव बलबीर सिंह का सर्वश्रेष्ठ सामाजिक कार्य माना जाता है। उस समय ईसाई मिशनरियों द्वारा अनेक हिन्दुओं के प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन करवाया जा रहा था । यह बात जब राव बलबीर के संज्ञान में आई तब उन्होंने अनेक हिन्दु प्रेमियों एवं सन्तों के साथ मिलकर धर्म परिवर्तन का काम बन्द करवा दिया। मुख्यतया दिल्ली के पुराने किले में जब हजारों हिन्दुओं को प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन करवाया जा रहा था तब राव बलबीर सिंह ने स्वामी कृष्णानंद से मिलकर न केवल लोगों को धर्म

[5]. आभीर कुलदीपिका , मान सिंह , पृ० सं० , 321

परिवर्तन को रोका अपितु जनसमाज को हिन्दुत्त्व के प्रति जाग्रत किया। इस कार्य में सन्त परमानन्द ने भी विशेष सहयोग प्रदान किया।

6. वृक्षारोपण का कार्य :- राव बलबीर सिंह किसानों के चहेते सामाजिक कार्यकर्ता माने जाते हैं। समय समय पर राव बलबीर सिंह किसानों की समस्याओं को निपटारा करते थे। उनको पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा प्रदान करते थे। उन्होंने अनेक प्राचीन वृक्षों का रोपण कार्य करवाया। जिसमें वटवृक्ष , पीपल , नीम इत्यादि अनेक वृक्षों का रोपण कार्य उनके द्वारा किया गया। वर्तमान समय में पर्यावरण एक सामाजिक मुद्दा है। राव बलबीर सिंह अपने जनसमाज को पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा प्रदान करते थे। किसानों ने यह कार्य बहुत ही आदरपूर्वक किया। इस प्रकार से राव बलबीर सिंह द्वारा अनेक सामाजिक कार्य करवाए गए। यहाँ उनका विस्तार से वर्णन नही किया जा सकता है। तथापि उनके प्रमुख कार्यों का वर्णन यहाँ प्रस्तुत किया गया है। अत: दक्षिण पश्चिम हरियाणा मे सामाजिक विकास में राव बलबीर सिंह का योगदान सदैव इतिहासकारों विषयवस्तु बना रहेगा।

राव बलबीर सिंह का शैक्षिक योगदान :- राव बलबीर सिंह का शैक्षिक योगदान भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मान गया है। जनसमाज को प्रेरणा प्रदान में राव बलबीर सिंह का योगदान कदापि भूलाया नही जा सकता है। उन्होंने अनेक शैक्षिक कार्यों में अपनी महत्त्वपूर्ण निभाई। जिनका वर्णन इस प्रकार है।

1. ब्रह्मचारी विद्या अध्ययन विद्यालय की स्थापना :- समाज में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक समाज का दर्पण होता है। इस सूक्ति को चरितार्थ करते हुए राव बलबीर सिंह ने अपने शिक्षकों की प्रेरणा से सर्वप्रथम ब्रह्मचारी विद्या अध्ययन विद्यालय की स्थापन की। समाज में यह कार्य उनको प्रशस्ति प्राप्त करने वाला था। यह प्रेरणा उनको रवीन्द्रनाथ टैगोर के शान्ति निकेतन से मिली। जिसके कारण राव बलबीर सिंह ने ब्रह्मचारी विद्या अध्ययन विद्यालय की स्थापना की। यहाँ विद्यार्थियों को धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों की प्रेरणा प्रदान की जाती थी।

2. महिला शिक्षा जाग्रति प्रदान करना :- महिला शिक्षा को जाग्रति प्रदान में राव बलबीर सिंह का महत्त्वपूर्ण योगदान है।[6] इन्होंने नारी शिक्षा निकेतन की स्थापना की। राव बलबीर सिंह महिला शिक्षा के प्रति अत्यधिक जागरूक थे। इस निकेतन में महिलाओं को एवं विधवा महिलाओं को तथा तलाकशुदा महिलाओं को शिक्षा प्रदान की जाती थी। यह कार्य महिलाओं के लिए प्रेरणा प्रदान करने

[6]. आभीर कुलदीपिका , मान सिंह , पृ० सं० , 338

वाला था । इस निकेतन की शैक्षिक कार्यशैली से प्रभावित होकर सेठ जमनालाल बजाज ने अपनी बहन और पुत्री को शिक्षा प्राप्त करने हेतु यहाँ भेजा ।[7]

महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने से श्रेष्ठ समाज का निर्माण होता है । वर्तमान समय में महिला शिक्षा के उत्थान के कारण ही रेवाडी जिले में 69% महिलाओं को शिक्षित होने का दर्जा प्राप्त है । यह राव बलबीर सिंह की प्रेरणा का प्रभाव है ।

3. पुस्तकालय की व्यवस्था कार्य एवं मुद्रण कार्य प्रारम्भ करवाना :- शैक्षिक कार्यों की गणना में पुस्तकों का अध्ययन एवं अध्यापन करना प्रमुख कार्य माना जाता है । राव बलबीर सिंह पुस्तकों के अध्ययन जीवन का अभिन्न अंग मानते थे । अत: उन्होंने आश्रम में पुस्तकालय की स्थापना करवाई । जिसमें वैदिक साहित्य , इतिहास एवं दर्शन तथा धर्म-संस्कृति की अनेक पुस्तकों को उपलब्ध करवाया गया। अनेक स्वाध्यायी यहाँ स्वाध्याय करने आते थे। यहाँ पर ऐतिहासिक एवं प्राचीन पुस्तकों को उपलब्ध करवाने में राव बलबीर सिंह महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । यह कार्य शिक्षा जगत् को प्रेरणा प्रदान करने वाला था । इसमें राव बलबीर सिंह ने पुस्तकों के मुद्रण का कार्य भी प्रारम्भ करवाया । यहाँ से अनेक पुस्तकों का मुद्रण कार्य होने लगा ।[8] राव बलबर सिंह द्वारा इस कार्य में विशेष सहयोग दिया गया ।

4. अहीर विद्यालय की स्थापना :- शिक्षा के क्षेत्र को अपने जीवन का केन्द्र मानकर राव बलबीर सिंह ने अहीर विद्यालय की स्थपना की । इन्होंने अहीर एजुकेशन बोर्ड के अध्यक्ष पद पर समर्पण भाव से कार्य किया ।[9]

वर्तमान में रेवाडी जिलें यह विद्यालय अहीर कॉलेज के नाम से प्रसिद्ध है ।[10] शिक्षा जगत् में अहीर विद्यालय मील का पत्थर सिद्ध हुआ। राव बलबीर के शैक्षिक आत्मीय प्रेम के कारण दक्षिण पश्चिम हरियाणा को बडी सौगात प्राप्त हुई । इस प्रकार से उनके द्वारा किए गए शैक्षिक कार्यों का योगदान वर्तमान में प्रेरणादायक है ।

Conclusion (उपसंहार) :- शोधपत्र के अन्त में निष्कर्ष रूप में स्वत: सिद्ध होता है कि राव बलबीर सिंह नें दक्षिण पश्चिम हरियाणा के सामाजिक एवं शैक्षिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ।

---

[7] . वही

[8] . आभीर कुलदीपिका , मान सिंह , पृ० सं० , 339

[9]. यादवों का बृहद् इतिहास , पृ० सं० , 249

[10] . यादवों का बृहद् इतिहास , पृ० सं० , 250

वर्तमान समय की रूपेरेखा को यदि दृष्टिगोचर किया जाए तो सभी कार्य जनसमाज को प्रेरणा प्रदान करते हैं। वर्तमान समाज में गौ संरक्षण, नारी शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण , स्वास्थ्य के प्रति जआगरूकता एवं विद्यालय आदि की स्थापना का कार्य सामाजिक विकास एवं शैक्षिक विकास में परिगणित है । इन सभी कार्यों पर सरकार के द्वारा भी गम्भीरता से विचार विमर्श किया जा रहा है। पर्यावरण प्रेमी एवं शिक्षाविदों द्वारा अनेक राष्ट्रिय एवं अन्ताराष्ट्रिय संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इनको समझने में राव बलबीर सिंह द्वारा किए गए कार्य सामाजिक एवं शैक्षिक भूमिका निभाते हैं। अत: निसंदेह यह शोधपत्र अपनी मौलिकता को सिद्ध करने में सहायक होगा, ऐसा शोधार्थी का मन्तव्य है ।

Bibliography (संदर्भ ग्रन्थ सूची)

1. यादव आभीर कुलदीपिका , मान सिंह , नई दिल्ली , 1986

2. इतिहास के झरोखे से , के.सी. यादव , नई दिल्ली , 1999

3. अहीरवाल का इतिहास एवं संस्कृति , के.सी. यादव , दिल्ली , 2000

4. हरियाणा का इतिहास , के.सी यादव , दिल्ली , 1982

5. यादवों का इतिहास , सुधानन्द योगी , दिल्ली ,1989

6. अहीरों का इतिहास , कृष्णानन्दा , दिल्ली

7. यादवों का बृहद इतिहास , जयनारायण सिंह यादव , नई दिल्ली , 2005 ॥